Research Paper Environment

भारत की पर्यावरणीय समस्याएं
(Bharat Ki Paryavaraniy Samasyae)

Raj Kumar | Associate Professor, Geology Dept., C.R.M. Jat P.G. College, Hisar, Hariyana.

ABSTRACT

पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। पर्यावरण में किसी भी अव्यवस्था एवं व्यविक्रय का मनुश्य सहित सभी जीवधारियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस अवस्था की उत्पति में प्राकृतिक प्रकोपों और प्रदूशण की प्रमुख भूमिका है जो आज पर्यावरण अध्ययन के मुख्य विशय बन गए हैं।

KEYWORDS

1. भूकम्प Earthquake :

भूकम्प जिसके उद्भव में पृथ्वी के अन्तर्गत बलों का योगदान है यदि रिएक्टर मापक पर इसकी तीव्रता 7 से अधिक है तो इससे धन–जन की भारी तबाही होती है। यदि भारत के भूकम्प क्षेत्रों पर दृश्टि डालें तो भूकम्पों के केन्द्र चार भागों तक सीमित हैं :

1. हिन्दुकष प्रदेष जहां सबसे ज्यादा भूकम्प आते हैं।
2. कुमायु तथा प0 नेपाल पर धारचूला क्षेत्र जहां भूकम्प के केन्द्र एक रेखीय आकार में उत्तर–पूर्व में दक्षिण पूर्व दिषा में फैले हैं।
3. पूर्वी भूटान कमेग सीमावर्ती क्षेत्र जहां भूकम्पों के क्षेत्र जहां भूकम्पों के क्षेत्र उत्त. र–दक्षिण दिषा में रेखीय मेखला के रूप में हैं।
4. उत्तर–पूर्वी असम, अरूणाचल, त्रिपुरा, नागालैण्ड का निकटवर्ती क्षेत्र अराकानयोना तक फैला है। यहां भी काफी गहराई पर उत्पन्न होते हैं।

2. सुनामी :

सागर निल्ल में रिएक्टर मापक पर 7 से अधिक तीव्रता वाले भूकम्पों के आने पर समुद्र में ऊंची–ऊंची लहरों को सुनामी कहा जाता है। 26 दिसम्बर, 2004 को इन्डोनेषिया के सुमात्रा तट (3.5 हछ व 95ह्म) के निकट रिएक्टर पैमाने पर 8.5 तीव्रता वाले भूकम्प देखे गए हैं इससे एषिया एवं अफ्रीका में 1.5 लाख लोग मारे गए और खरबों की सम्पत्ति तबाह हो गई। भारत में अण्डमान निकोबार द्वीप समूह तथा तमिलनाडू, आन्ध्र प्रदेष, केरल एवं पुंडूचेरी के तटीय भागों में तबाही देखी गई। अकेले अण्डमान निकोबार में 10,000 लोग गुम पाए गए। मुख्य स्थल पर तमिलनाडू सुनामी से सर्वाधिक क्षतिग्रस्त रहा जिसके नागपट्टिनम कन्याकुमारी, कुड्डालोर और चेन्नई जिले बुरी तरह से प्रभावित रहे।

आन्ध्रप्रदेष में अधिकांष मौतें कृश्णा, प्रकासम, मेल्लौर, पष्चिम गोदावरी तथा पूर्वी गोदावरी जिलों में हुई। केरल के कोल्लन अलप्पुजा, एर्णकुलम और कोझिकोड तथा पुंडूचेरी के कराईकल जिलों में भी देखी गई।

सुनामी के प्रभाव से कैम्पबैल वे द्वीप के कई पुलिन विलुप्त होगा और त्रिकेट द्वीप दो भागों में बंट गया। ळ्दै के आंकड़ों से पता चलता है कि भूकम्प से समूचे दक्षिणी पूर्वी एषिया के भूभाग की स्थिति कुछ से0मी0 पूरव की ओर खिसकी है। इसी तरह तिरूअनन्तपुरूम की स्थिति में 26 मीटर और बंगलौर की स्थिति में 15 मीटर का परिवर्तन देखा गया है।

3. चक्रवात (Cyclones) :

भारत में चक्रवातों, मुख्यतः उश्ण कटिबंधीय चक्रवातों, विक्षोमों से उडीसा, आन्ध्र प्रदेष, प0 बंगाल, तमिलनाडू और गुजरात के तटीय क्षेत्रों में धन–जन की अपार क्षति होती है। ये चक्रवात अधिकतर बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के खुले भागों में 80 से लेकर 150 उतरी आक्षांषों में बनते हैं तथा मानसून के पूर्व उत्तर काल में अधिक देखे जाते हैं। विष्व के मौसम वैज्ञानिक संगठन के अनुसार भारत में विष्व के लगभग 6 प्रतिषत चक्रवात आते हैं (चीन–जापान 30 : संयुक्त राज्य 23) औसतन प्रतिवर्श 20 से 25 तीव्र चक्रवात बनते हैं जिनमें 2–3 विनाषक होते हैं। अरब सागर की अपेक्षा बंगाल की खाड़ी में इनकी संख्या अधिक देखी जाती है। भारतीय मौसम विभाग ;ैडक्द्ध के अनुसार बंगाल की खाड़ी में जल के तापमान के 260ब से अधिक होने पर एक समान्य चक्रवात भी प्रचण्ड हो जाता है।

भूविज्ञान अध्ययन केन्द्र तिरूअनन्तपुरम के अनुसार पूर्वी तट देष का सर्वाधिक चक्रवात प्रवण क्षेत्र हैं। भारत के भेद्यता एक्लस में उड़ीसा तट को अति उच्च चक्रवात प्रभावित क्षेत्र के तौर पर दिखाया गया है। अक्टूबर 1847 (बंगाल), अक्टूबर 1874 (बंगाल), नवम्बर 1977 (आन्ध्रप्रदेष) मई 1990, (आन्ध्रप्रदेष), अक्टूबर 1996 (आन्ध्रप्रदेष), जून 1998 (गुजरात) और अक्टूबर 1999 (उड़ीसा) में आने वाले कुछ प्रचण्ड चक्रवात रहे हैं जिनसे धन–जन की अपार क्षति हुई है। इनमें 29 अक्टुबर 1999 को आए उड़ीसा के चक्रवात से 11,000 से अधिक लोगों की जान गई। 17.5 लाख से अधिक की खरीफ की फसल बरबाद हो गई और लगभग उड़ीसा राज्य का एक तिहाई भाग समुद्र की खारे पानी से ढक गया था। 1892 से 2004 के बीच आन्ध्र प्रदेष में 71 उग्र चक्रवात आ चुके हैं। इनकी उग्रता मई, अक्तूबर एव नवम्बर में अधिक देखी जाती है।

इनसे उठने वाली सागरीय लहरों की ऊंचाई 5 मीटर या अधिक होती है जिससे तटीय क्षेत्रों में भयंकर बाढ़ आ जाती है। पष्चिमी तट के सहारे गुजरात राज्य में विनाषकारी चक्रवात आते हैं। भारत के भेद्यता एटलस में कच्छ, जामनगर पोरबन्दर, जूनागढ़, अमेरी और भावनगर जिले अत्याधिक क्षति वाले क्षेत्र में दिखाए गये हैं। 9 जून, 1998 को चक्रवात से गुजरात में 1261 लोग मारे गए थे और 2.57 लाख मकान नश्ट हो गये थे।

4. भूस्खलन (Land Slides) :

भूस्खलन गुरूत्व के कारण ढाल के सहारे षैल, मिट्टी और वनस्पति का तेजी से होने वाला प्रवाह है। इसके कारण पर्वतीय ढालों के सहारे सड़क निर्माण, नहर, खनन, अधिक पषुचरण, निर्वनीकरण, अवैज्ञानिक कृशि पद्धति, भवन निर्माण आदि को षामिल किया जा सकता है। इसी प्रकार भूकम्प और तीव्र वर्शा से भूस्खलन में मदद मिलती है।

भारत में भूस्खलन के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं : 1. हिमालय 2. पष्चिमी घाट 3. दक्षिणी पठार। हिमालय क्षेत्र में उत्तराखंड, जम्मू और कष्मीर, हिमाचल प्रदेष, पष्चिमी बंगाल (दार्जिलिंग और जलपाई गुड़ी जिले) और अरूणाचल प्रदेष भूस्खलन से प्रभावित होते रहते हैं। यहां मुख्य सीमान्त क्षेत्र, डठज्द्ध और मुख्य केन्द्रीय क्षेय, डबज्द्ध की मेखलाएं भूस्खलन की दृश्टि से सर्वाधिक सुभेद्य क्षेत्र हैं। यहां खैरार, सनारा लोहा. रखेत, सुमगढ़, गडेला, गौतिया और बार इलाके भूस्खलन प्रवण क्षेत्र हैं (जोषी, 1988, पांडे आदि 2002) इन क्षेत्रों में मानसून वर्शा के दौरान भूस्खलन के खतरे बढ़ जाते हैं। यहां 15 अगस्त 1977 तो भारत–चीन सीमा (44 लोग मृत, 20 लाख रू0 की सम्पति नश्ट) जुलाई 1975 को उत्तरी बंगाल (4500 लोग बेघर बार), सितम्बर 1970 को उत्तराखण्ड (223 लोग मृत) जुलाई 1970 को अलकनन्दा घाट (100 लोग मृत) जुलाई 23, 1983 को कमी बागेष्वर (150 मृत) अगस्त 12–18, 1998 को माल्या (384 लोग मृत) सितम्बर 24 अक्तूबर 10, 2003 को उत्तरकाषी और जुलाई 6, 2004 को बद्रीनाथ के भूस्खलनों से धन–जन की अपार क्षति हुई है।

हिमालय क्षेत्र में रिएक्टर पैमाने पर 4 से अधिक तीव्रता के भूकम्प से भूस्खलन को बढ़ावा मिलता है। 1928 के भूकम्प से कपकोट (अल्मोड़ा) का बड़ा क्षेत्र भूस्खलन से प्रभावित हुआ था। पष्चिमी घाट के अरब सागर की तरफ के ढाल खड़े हैं। यहां के कोंकण तट के सहारे वर्शा काल और भूकम्पों के दौरान भूस्खलन की घटनाएं बढ़ जाती। नीलगिरि और अनाईमुड़ि पहाडियों के ढालों के सहारे भूस्खलन होते रहते हैं। इन पहाड़ियों के उपरी भाग वनस्पति विहीन तथा लैटेराइट मिट्टी से ढ़के हैं जिससे भारी वर्शा के दौरान भूस्खलन के खतरे बढ़ जाते हैं। वर्श 1993 में नीलगिरी (तमिलनाडु) के भूस्खलन के 40 लोग मारे गए थे और 600 परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर हटाना पड़ा था।

5. हिमस्खलन (Avianche) :

हिमस्खलन में पर्वतीय ढालों के सहारे तेजी से हिमराषि और षिलाओं का प्रवाह होता है जिससे पर्वतीय क्षेत्रों में धन–जन की अपार क्षति होती है। ये हिमस्खलन षीत ऋतु में हिमपात और वसन्त ऋतु में हिमद्रवण के समय अधिक देखे जाते हैं। इनसे सड़कों, मकानों, बांधों आदि को नुकसान पहुंचता हैं। भारत में जम्मू–कष्मीर (कष्मीर एवं गुरेज घाटियों के उपरी क्षेत्र, कारगिल, लद्दाख) हिमस्खलन में पर्वतीय

ढालों के सहारे तेजी से हिमराषि और षिलाओं का प्रवाह होता है जिससे पर्वतीय क्षेत्रों में धन–जन की अपार क्षति होती है। ये हिमस्खलन षीत ऋतु में हिमपात और वसन्त ऋतु में हिमद्रवण के समय अधिक देखे जाते हैं। इनसे सड़कों, मकानों, बांध ों आदि को नुकसान पहुंचता है। भारत में जम्मू–कष्मीर (कष्मीर एवं गुरेज घाटियों के उपरी क्षेत्र, कारगिल, लद्दाख), हिमाचल प्रदेष (चम्बा, कुल्लू–स्पीति, किन्नौर) और उत्तराखण्ड (टिहरी–गढ़वाल और चमोली जिलों के भाग) राज्यों की ऊँचाई के भाग इससे प्रभावित देखे जाते हैं। हिमाचल प्रदेष में मार्च 1978 (30 लोग मृत), मार्च 1979 (237 लोग मृत), मार्च 1991 (40 दिनों तक सड़क मार्ग अवरूद्ध) सितम्बर 1995 (हिमद्रवण से बाढ) और जम्मू–कष्मीर में दिसम्बर 1982 (100 लोग मृत) दिसम्बर 1984 (27 सैनिक मृत), मार्च 1988 (70 लोग मृत) के हिमस्लखन विनाषकारी रहे हैं।

REFERENCES

1. Bhattacharya, S.N. 1970, Community Development : An Analysis of the Program in India, Calcutta, Academic Publishers. | 2. Dube, K.N. , 1990 (ed.) Planning and Development in India, New Delhi, Asia, Publishing house. | 3. Gilkson, A, 1955, Regional Planning and Development, Heiden, Nether-lands. | 4. Govt. of India 1988, Regional Plan, 2001-National Capital Region, NCRPB, Ministry of urban Development, New Delhi. | 5. Tiwari, R.C., 2006 Geography of India, Allahabad Prayag Pustak Bhawan. | 6. Bhatacharya, S.N. 1970 Community Development : An Analysis of the Programme in India, Calcutta, Academic, Publishers. |